ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
'માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા'
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-4 अंक : 38

सहयोग शुल्क : रु. 1 / फरवरी : 2020

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"ना हारना जरुरी है, ना जीतना जरुरी है।
ये जिंदगी एक खेल है, खेलना जरुरी है॥"
– संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

"जितना कठिन संघर्ष होगा।
जीत उतनी ही शानदार होगी॥"
– प्रधानमंत्री, नरेन्द्र मोदी

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

"जिस हवा में फूल अपने पूरे सौन्दर्य के साथ नहीं खिल सकता, वह हवा अवश्य दूषित हवा है। जिस समाज में मनुष्य अपने व्यक्तित्व का पूरा विकास नहीं कर सकता, वह समाज भी अवश्य दूषित समाज है।" हमे यह बात को गंभीरता से समजना है। दिखने में छोटी लगती यह बात का असल में काफ़ी गहरा अर्थ है। समाज समन्वय से, समानता से बनता है। हर दिव्यांगजन को समाज में स्वीकृति मिलनी चाहिए - और यही हमारा लक्ष्य है। स्वीकृति मिलनी यानी वह लोग सामान्यजन के साथ एक समानता का अनुभव करे या कहो की शक़्कर की तरह आसानी से घुल-मिल सके।

इस पत्रिका प्रकाशित करने के शुभ आशय यही है की, इस माध्यम से कुछ ओर दिव्यांग सेवी संस्था एवं व्यक्ति को यह सामाजिक यज्ञ में जोड़ सके।

हमारे साथ जुड़ने वाले सभी को धन्यवाद। हमारा अनुरोध है की आप भी यदि कोई दिव्यांग सेवी संस्था या व्यक्ति के बारे में जानकारी रखते हो तो हमें सूचित करे। हम इस पत्रिका के माध्यम से लोगों तक पहुंचाएंगे।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

फरवरी : 2020, पृष्ठ संख्या : 16

वर्ष : 4 अंक : 38

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

परम पूज्य संतश्री ॐऋषि प्रीतेशभाईकी उपस्थिति में मनाया गया दिव्यांग पतंग महोत्सव

प. पू. सद्गुरु ॐऋषि प्रितेशभाई की प्रेरणा से ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट संचालित ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे-केर सेन्टर द्वारा पतंग महोत्सव का आयोजन किया गया। उस महोत्सव में दिव्यांग बच्चों ने पतंग उड़ाई और साथ में डी.जे के ताल पर झूमे। उसके बाद दोपहर का भोजन किया गया और बाद में कार्यक्रम का समापन हुआ।

वोइस टू दिव्यांग

ॐकार दिव्यांग ट्रेनिंग डे-केर सेन्टर के बच्चों ने अहमदाबाद रिवरफ्रंट स्थित फ्लावर शो-२०२० की मुलाकात की उसकी एक झलक....

अनुरा शाला के दिव्यांग बच्चों का चतुर्थ वार्षिक कार्यक्रम

अनुरा शाला के न्यूरोसाइक्याट्री डीसऑर्डर से पीड़ित बच्चों द्वारा किये गए नृत्य से अभिभावक सब भाव-विभोर हो गए। बच्चे और शिक्षकों के प्रोत्साहन के लिए गुजरात सचिवालय के जानेमाने आई. ए. एस. ऑफिसर श्री. डी. जी. झालावाडिया (रीटा. आई. ए. एस.) साहब उपस्थित थे।

अनुरा शाला में ४ साल से २० साल की आयु के २० विद्यार्थी स्वतंत्र तरीके से अपनी दैनिक क्रिया सीख रहे है। सेलेब्रल पाल्सी, डाउन सिन्ड्रोम, हाइपर एक्टिव और डिस्लेक्सिया जैसे न्यूरोलॉजिक डिसऑर्डर से पीड़ित बच्चे अनुरा में अभ्यास कर रहे है।

अनुरा गुजरात राज्य बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त एकमात्र शाला है। यहाँ हर विद्यार्थी के लिए एक शिक्षक की व्यवस्था की गई है। बच्चो ने स्टेज पर १० विभिन्न प्रकार के नृत्य, गीत, फैशन शो और अभिनय कर के साल दरम्यान सीखी हुई कला प्रदर्शित की।

यहाँ विद्यार्थी हररोज ५ घंटे दैनिक क्रिया सीखते है साथ में अक्षर ज्ञान और जरुरी थेरापी दी जाती है। यहाँ बच्चो के द्वारा पढाई के साथ हर त्यौहार को भी मनाया जाता है।

वोइस टू दिव्यांग

अहमदाबाद के मेमनगर स्थित औडा गार्डन में नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कुल फॉर मेन्टली चैलेंज्ड के १०० और हेल्थ एन्ड केर फाउन्डेशन के २५ मिलकर १२५ मनोदिव्यांग बच्चों के लिए लायन्स क्लब शाहीबाग की ओर से पतंगोत्सव का आयोजन किया गया।

बच्चों ने बड़े उत्साह से उनके शिक्षकों की मदद से पतंग उड़ाए। साथ में संगीत का भी आनंद लेते थे। अलग-अलग पतंग को उड़ाते वक्त बच्चें मस्ती से झूम उठते थे और कोहराम मचा के मकरसंक्रांति का एक जोरदार माहौल बना दिया था।

पतंग उड़ाने के बाद सब बच्चों को उंधियु-पुरी-जलेबी का भोजन दिया गया। कलरव चिल्ड्रन हॉस्पिटल की ओर से सब बच्चों को लंच बॉक्स गिफ्ट में दिया गया। बेर,अमरुद और चिक्की तो बच्चों ने पतंग उड़ाने के साथ ही खाए थे।

इसतरह, पतंगोत्सव के जरिए मनोदिव्यांग बच्चों ने मकरसंक्रांति के पूर्व इस त्यौहार का मस्ती भरा अनुभव किया।

दिनांक ११ जान्युआरी को सुबह १० से १-०० बजे तक स्मित एज्युकेशन ट्रस्ट के मनोदिव्यांग बच्चो ने म्युनिसिपल गार्डन, अखबारनगर, नवा वाडज में मकरसंक्रांति पर्व महोत्सव मनाया। इस अवसर पर सब बच्चो को पतंग, दोरी, रंगीन चश्मा, तिल और मूंगफली की चिक्की बांटी गई और भोजन भी दिया गया। लायन्स क्लब जोधपुर हिल और गायत्री परिवार नारणपुरा के सदस्य, अभिभावकों, कॉर्पोरेटर जिग्नेश पटेल और आमंत्रित मेहमानों की उपस्थिति में बच्चों ने इस पर्व को बड़े आनंद और उत्साह से मनाया।

अहमदाबाद के मेमनगर स्थित नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ. हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कुल फॉर मेन्टली चैलेंज्ड संस्था के स्थापना दिन के अवसर पर एक अनोखा कार्यक्रम का आयोजन सुबह १० से २ बजे तक मेमनगर स्थित औडा गार्डन में किया गया। २७ साल पूर्ण कर के २८वे साल में प्रवेश करने पर संस्था के करीब १०० जितने मनो दिव्यांग बच्चों ने पुराने खेल जैसे की अंधी दौड़, निम्बू चम्मच, गेंद पासिंग, सत्तोलिया, लंगड़ी, दौड़, गेंद थ्रो और बकेट गेंद को खेलने का आनंद लिया। अभिभावकों के लिए भी एक सेमिनार का आयोजन तब किया गया । उस सेमिनार में संस्था के ट्रस्टीगण द्वारा शिक्षक और अभिभावक के समन्वय के आधार पर बच्चों की तालीम कितनी फायदेमंद है वो समजाया गया। अभिभावक और शिक्षक सिक्के की दो बाजु है। दोनों के बीच एकरूपता-समज-बच्चें की तालीम कार्यक्रम और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

कार्यक्रम के अंत में बच्चें और अभिभावकों ने शिक्षक के साथ डोसा और उतप्पम का भोजन किया। इसतरह एक अवेरनेस के अंतर्गत संस्था के २८ वे स्थापनादिन को मनाया गया।

गायत्री विकलांग मानव मंडल

रुक्मणिबेन जे शाह को दिव्यांगो की श्रेष्ठ कामगीरी के लिए राज्य कक्षा पर पारितोषिक से सम्मानित किया गया है। उसके साथ पांच हजार का चेक भी दिया गया। 25 साल से गायत्री विकलांग मानव मंडल के संचालन कर्ता संस्था के स्थापक सेवा कर रहे है। वो दोनों पैरो से विकलांग होने के बावजूद जीवन के अनुभवों से वृध्ध, विधवा, निराधार और विकलांग की श्रेष्ठ कामगीरी कर रहे है। लगभग 25 साल में बीस हजार विधवा, वृध्ध, निराधार बहनों को साड़ी वितरण कर चूके है। और हर साल ठंडी में विकलांग, वृध्ध, निराधार १०,००० भाईओ और बहनों को कम्बल और स्वेटर का वितरण करते है। विकलांग और निराधार बहनों को रोजीरोटी के लिए सिलाई मशीन दे कर पगभर किया है। माता-पिता बिना की १००० बेटियों को स्कूल ड्रेस, नोटबुक, स्कुल-बेग और किट्स दे कर मुफ्त शिक्षण देने का आयोजन किया है।

समा प्राथमिक स्कूल में १५ अगस्त और २६ जनवरी के दिन बच्चों को बिस्किट, चोकलेट दे रहे है। और ये संस्था की तरफ़ से गरीब बच्चों को भोजन और जीवन जरूरियात अनाज और कपड़े का वितरण करते है। और ये संस्था द्वारा आई चेकअप केम्प और सर्व रोग निदान मुफ्त में दवाइयों का भी वितरण करते है। विकलांगो को २५०० ट्राइसिकल और व्हिलचेर और जिनका पैर कट गया है उनके लिए पैर भी बनवाते है। राज्य कक्षा के पारितोषिक एवोर्ड बडौदा में नर्मदा राज्य विकास मंत्री श्री योगेश पटेल और सांसद श्रीमती रंजनबेन भट्ट के हाथो से देकर सम्मानित किया गया है। आज मेरी उम्र ६५ साल है। कम उम्र में विधवा हुए जीवन के संघर्षो और कड़वे अनुभवों देख कर मन में तय किया की मेरे से ज्यादा दुखी और विकलांग लोगो की सेवा कर के मेरा जीवन धन्य बनाऊ। मेरे चार बच्चों का पालन पोषण करने के लिए मैंने समाज और सगे संबंधी की परवा किए बिना दूकान शुरू कर के रोजीरोटी कमाई। और ये देखकर दूसरो को भी प्रेरणा मिले। संस्था का लक्ष्य ये है की विकलांगो को भिखारी मत बनाओ, उसको रोजीरोटी दो। और महेनत की कमाई करने दो। हिम्मते मदद तो मददे खुदा। हम किसी को मदद करेंगे तो इश्वर हमारी मदद करेंगे ये हमें आत्मविश्वास है। ये एवोर्ड मेरी सफलता का रहस्य है। निस्वार्थ सेवा मानव सेवा। भले एक अंग भंग हो पर इश्वर की शक्ति अपरंपार है। जो कम दोनों पैरो वाले भी नहीं कर सकते है वो काम हम दिव्यांग होते हुए अच्छे से करते है। इसके लिए लोगो को प्रेरणा मिले की इतनी उम्र में इतनी लगन से परोपकार का कार्य कर सकते है। इसके लिए सरकार भी हमारी कदर करते है। इसलिए हमें एवोर्ड देकर सम्मानित किया है।

हमें बहुत खुशी और आनंद है की हम विकलांग नहीं हम दिव्यांग है। हौसला बुलंद है। उडान पंखो में नहीं दिल में शक्ति और आशा की किरन हो तो वो हिमालय भी पार कर सकता है। ये रुक्मणि देवी ने जानकारी दी है।

विश्व हस्तलेखन दिन के अवसर पर अमदावाद की दिव्यपथ शाला में हस्तलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अमदावाद के स्मित दिव्यांग शाला के विद्यार्थी सामान्य विद्यार्थीओ के साथ प्रतियोगिता में उपस्थित हो कर वर्ल्ड रेकॉर्ड में सहभागी बनें। इस प्रतियोगिता में प्रथम क्रमांक प्राप्त हुआ। और इस कार्य में भाविनीबेन मिस्त्री को साथ-सहकार फाउन्डेशन के रुषिनाबेन पटेल द्वारा प्रायोजित था।

खेल और विकास

खेल खेलना किसे पसंद नहीं होता ? छोटे, बड़े, बुजर्ग सब को खेल खेलना पसंद है । जब हम बात कर रहे है मनोदिव्यांग बच्चो की, तो इन्हें भी खेल खेलना ज्यादा पसंद है। समाज के दूसरे बच्चों के साथ यह बच्चे नहीं खेल सकते। उनकी क्षमता न होने से वह लोग सामान्य बच्चों के घुलमिल नहीं सकते। कहा जाता है की खेल के द्वारा बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक विकास अच्छा होता है। उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

ऐसे ही एक अच्छे लक्ष्य के साथ अपनी संस्था हर साल संस्था के हर बच्चे के लिए रमतोत्सव का आयोजन करती है। संस्था की सहशिक्षिका संगिताबेन यह प्रोग्राम का आयोजन करती है । संस्था का लक्ष्य बच्चो के अंदर छूपी हुई सुषुप्त शक्तिओ को जगाना है। उनको भी खेल खेलने का हक है। हमारी संस्था में मनोदिव्यांग, ओटिझम और सेरिब्रल पाल्सी से पीड़ित बच्चे तालीम ले रहे है। खेल महाकुंभ में सब बच्चे हिस्सा नहीं ले सकते। तो उन बच्चो का क्या ? सब बच्चे खेल सके इसके लिए संस्था दिसंबर में रमतोत्सव का आयोजन करती है। संस्था के पास अपना मैदान नहीं होने के कारण नजदीक के औडा गार्डन में बच्चो को ले जाते है और वहां सब बच्चे खेल खेलते है। गार्डन में सब बच्चो को चार ग्रुप में बांटा जाता है। (१) माइल्ड ग्रुप (२) मॉडरेट ग्रुप (३) सीवियर ग्रुप (४) सी.पी. ग्रुप। हर ग्रुप में १५ से २० बच्चे होते है। माइल्ड और मॉडरेट ग्रुप के बच्चो के खेल एकसमान होते है। सीवियर और सी. पी. ग्रुप के खेल एकसमान होते है। लक्ष्य एक ही होता है की सब बच्चे हिस्सा ले। दौड़, बॉल थ्रो, बकेट बॉल जैसे खेल समाविष्ट होते है। खेल खतम होने के बाद नास्ता और ईनाम का वितरण किया जाता है। ऐसे ही एक अच्छे लक्ष्य के साथ अपनी संस्था हर साल संस्था के हर बच्चे के लिए रमतोत्सव का आयोजन करती है। संस्था की सहशिक्षिका संगिताबेन यह प्रोग्राम का आयोजन करती है। संस्था का लक्ष्य बच्चो के अंदर छूपी हुई सुषुप्त शक्तिओ को जगाना है। उनको भी खेल खेलने का हक है। हमारी संस्था में मनोदिव्यांग, ओटिझम और सेरिब्रल पाल्सी से पीड़ित बच्चे तालीम ले रहे है । खेल महाकुंभ में सब बच्चे हिस्सा नहीं ले सकते । तो उन बच्चो का क्या ? सब बच्चे खेल सके इसके लिए संस्था दिसंबर में रमतोत्सव का आयोजन करती है। संस्था के पास अपना मैदान नहीं होने के कारण नजदीक के औडा गार्डन में बच्चो को ले जाते है और वहां सब बच्चे खेल खेलते है। गार्डन में सब बच्चो को चार ग्रुप में बांटा जाता है । (१) माइल्ड ग्रुप (२) मॉडरेट ग्रुप (३) सीवियर ग्रुप (४) सी.पी. ग्रुप। हर ग्रुप में १५ से २० बच्चे होते है। माइल्ड और मॉडरेट ग्रुप के बच्चो के खेल एकसमान होते है। सीवियर और सी. पी. ग्रुप के खेल एकसमान होते है। लक्ष्य एक ही होता है की सब बच्चे हिस्सा ले। दौड़, बॉल थ्रो, बकेट बॉल जैसे खेल समाविष्ट होते है। खेल खतम होने के बाद नास्ता और ईनाम का वितरण किया जाता है। स्पेशियल - ओलम्पिक गुजरात द्वारा हर साल इन बच्चो के लिए ओलम्पिक खेल का आयोजन होता है। अपनी संस्था ४० बच्चो को ओलिम्पिक में खेलने के लिए तैयार करती है। जिसमें बच्चों को उनके लेवल के अनुरूप चयन कर के प्रेक्टिस करवाई जाती है । जिसमें बास्केटबाल, वोलीबाल, हेन्डबाल, बेडमिन्टन, एथलेटिक्स जैसे खेल की प्रेक्टिस संस्था का अपना मैदान न होने से नजदीकी औडा गार्डन में जा कर संस्था के समय में शिक्षक गौरांग शिंदे द्वारा करवाई जाती है । और स्केटिंग, स्वीमिंग, टेबल-टेनिस, फ्लोर होकी, साइकलिंग, फुटबाल और पावर लिफ्टिंग जैसे खेल संस्था के अतिरिक्त समय में स्पोर्ट्स कोम्पलेक्स में जा कर कोच द्वारा सिखाया जाता है । यह सब खेल की प्रवृत्ति में बच्चे, शिक्षक एवं कोच को संस्था के संचालक श्री निलेशभाई के मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

२०१२ खेल महाकुंभ में संस्था के ३५ बच्चों ने हिस्सा लिया था । उनमें से १७ बच्चों ने अलग-अलग खेल में गोल्ड, सिल्वर और ब्रोंझ मेडल अर्जित किये। संस्था के ३ खेलवीर ने अंतर्राष्ट्रीय खेल में गोल्ड मैडल अर्जित किया है। जिसमें मानव शाह ने हेन्डबाल में (आयर्लैंड), लॉईड ने हेन्डबाल में (यु.एस.ए.) और रश्मि मर्चंट ने बास्केटबाल एस्कोर्ट में (ग्रीस, एथेंस) मैडल प्राप्त किये। इसतरह संस्था के खेलवीर ने जिल्ला कक्षा में, राज्य कक्षा में, राष्ट्रीय कक्षा में और अंतर्राष्ट्रीय कक्षा में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन कर के संस्था का नाम रोशन किया है।

- गौरांग शिंदे (स्पोर्ट्स एक्टिविटी इंचार्ज)
नवजीवन ट्रेनिंग सेंटर

+++

श्री निकेतन पटेल (पूर्व शिक्षकश्री)
नवजीवन ट्रेनिंग सेंटर

स्पेशियल शाला और शिक्षा

शिक्षा पाना हर बच्चे का अधिकार है फिर वह बच्चा सामान्य हो या दिव्यांग हो। कहा जाता है की मिल्कत, धन दौलत, जमीन-जागीर यह सब में बंटवारा हो सकता है। मगर खुद की बुद्धि, चालाकी, ज्ञान, कौशल्य इन सब में बंटवारा नहीं हो सकता। अपनी बुद्धि, अर्जित किया हुआ ज्ञान और अपनी कौशल्यता द्वारा मनुष्य जीवन में आनेवाली कठिनाइयों का सामना कर सकता है और जीवन में अनोखी सिद्धि हासिल कर सकता है।

सामान्य बच्चा हो तो उसके शिक्षा एवं तालीम के लिए सामान्य शाला में रखा जाता है। मगर दिव्यांग बच्चो की शिक्षा एवं तालीम के लिए स्पेशियल शाला लाभदायी होती है। गाँव में रहते दिव्यांग बच्चो की शिक्षा के लिए केंद्र सरकार ने 'सर्व शिक्षा अभियान' की घोषणा की है। उसका अर्थ यह है की ६ से १४ साल के बच्चे को शिक्षा अनिवार्य कर दी है।

यहाँ आपके समक्ष स्पेशियल शाला की शिक्षा एवं तालीम और 'सर्व शिक्षा अभियान' के अंतर्गत नियुक्त रिसोर्स टीचर के द्वारा गांव में पढ़ते दिव्यांग बच्चो को जो शिक्षा एवं तालीम दी जाती है उन दोनों में क्या फर्क है वो बताना चाहता हूँ।

१. स्पेशियल शाला में बच्चो का समय और शिक्षा एवं तालीम देने वाले विशिष्ट शिक्षक का समय निर्धारित होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक और बच्चा एक दूसरे के संपर्क में रहने से शिक्षा का स्तर ऊँचा रहता है।

१. जब 'सर्व शिक्षा अभीयान' मिशन अंतर्गत विशिष्ट शिक्षक को रोज दो शाला में शिक्षा देने की होती है। हफ्ते में एक शाला को एक बार समय देने के कारण बच्चो के साथ ज्यादा समय नहीं मिलता।

२. विशिष्ट शाला में पढ़ते बच्चो के अभिभावक जागृत होने के कारन शिक्षक की सलाह और मार्गदर्शन का पालन करते है।

२. गांव के बच्चो के अभिभावकों की आर्थिक स्थिति और पढाई का स्तर अच्छा नहीं होने के कारण बच्चो को सही मार्गदर्शन और समय नहीं दे पाते।

३. विशिष्ट शाला में चित्र-प्रतियोगीता, खेल-प्रतियोगिता, सांस्कृतिक-प्रतियोगिता का आयोजन अच्छे ढंग से किये जाने से बच्चे अपना कौशल्य दिखा सकते है।

३. 'सर्व शिक्षा अभीयान' मिशन के अंतर्गत ऐसी कोई प्रवृत्ति नहीं की जाती है। इस कारण से बच्चो की सुशुप्त शक्ति का परिचय नहीं होता।

४. विशिष्ट शाला में हर त्यौहार मनाये जाते है और उसका महत्त्व भी समजाया जाता है।

४. 'सर्व शिक्षा अभियान' मिशन के अंतर्गत ऐसे कोई त्यौहार नहीं मनाया जाता।

५. विशिष्ट शाला में बच्चो को स्पीच थेरपी, फिजियोथेरपी और ऑक्यूपेशनल थेरपी दी जाती है।

५. 'सर्व शिक्षा अभियान' मिशन के अंतर्गत ऐसी कोई सुविधा नहीं दी जाती है। शिक्षक अपने समय अनुसार अपना प्रयत्न करता है।

६. विशिष्ट शाला में बच्चो को वोकेशनल प्रवृति के अंतर्गत मोमबत्ती बनाना, मिट्टी के दिये बनाना जैसे कार्य सिखाया जाता है जिससे वो लोग स्वनिर्भर हो सके।

६. 'सर्व शिक्षा अभियान' मिशन के अंतर्गत वोकेशनल प्रवृत्ति सिखाई नहीं जाती क्यूंकि वहां साधन और जगह का अभाव होता है। और यह प्रवृत्ति कुछ उम्र तक ही सिखाई जा सकती है।

अतः मनो दिव्यांग बच्चो के लिए स्पेशियल शाला ही तालीम और शिक्षण का पर्याय है।

त्यौहार और आउटिंग

अपने बच्चों के लिए त्यौहार मनाना क्यों जरुरी है ?

त्यौहार मनाने से बच्चों कप त्यौहार कैसे मनाया जाता है उसका ख्याल आता है। त्यौहार मनाने से पहले संस्था में त्यौहार के बारे में शिक्षक माहिती देते है और त्यौहार कैसे मनाया जाता है इसकी समज दी जाती है। त्यौहार मनाने से बच्चों में आनंद का अनुभव होता है। त्यौहार में बच्चे एक दूसरे के साथ आनंद का अनुभव करते है।

हमारी संस्था पूरे साल में अलग अलग कार्यक्रम करती है। जिसमें त्यौहार कुछ अलग ही तरीके से मनाया जाता है। जिससे बच्चों को त्यौहार और आउटिंग दोनों का अनुभव होता है। कुछ त्यौहार संस्था के अन्दर और कुछ संस्था के बहार मनाया जाता है। जिसमें में संस्था के बहार जो मनाया जाता है उन त्योहारों के बारे में माहिती दे रही हूँ। संस्था की अंदर मनाने वाले त्योहारों के बारे में सह शिक्षिका कृतिकाबहन बतायेंगी। संस्था के बहार तीन प्रोग्राम किये जाते है। जिसमे तिन संस्था हिस्सा लेती है। शाहीबाग, मदन-मोहन और नवजीवन। (1) नवरात्री (2) उत्तरायण (3) दीपावली. जिसमे नवरात्री शिवशक्ति हॉल, भुयंगदेव चार रस्ता के पास मनाई जाती है। इस कार्यक्रम के प्रायोजक लिओ क्लब के सदस्य होते है। वो लोग बच्चों के लिए टोकन इनाम, फ़ूड पेकेट, और डी.जे पार्टी का आयोजन करते है। यह त्यौहार नवरात्री के आरंभ के पहले दिन ही मनाया जाता है। सोसायटी में या बहार कैसे गरबा खेला जाय और ड्रेसिंग कैसा होना चाहिए इसकी सचोट तालीम और माहिती दी जाती है। रात से शुरू होनेवाली नवरात्री में गरबा कैसे खेला जाता है उसके बारे में जानकारी दी जाती है। बच्चों के साथ में शिक्षकों, अभिभावकों और लिओ क्लब के सदस्य गरबा में जुड़ कर बच्चों का उत्साह बढ़ाते है।

उत्तरायण का त्यौहार 'काके का ढाबा' मेमनगर में मनाया जाता है। इस त्यौहार मनाने में लायंस क्लब की महिलाए सहाय करती है। 'काके का ढाबा' में खूला मैदान होने से बच्चों को आनंद आता है। पतंग उड़ाने के साथ में उनको होटल में खाने का भी आनंद आता है। होटल के मालिक और वेइटर भी बच्चों को अच्छे से मदद करते है। बच्चों को सिखाया भी जाता है की किसीकी दोर पकड़ के खींचनी नहीं चाहिए, पतंग पकड़ने के लिए दौड़ना नहीं चाहिए और छत की कटघरी पर चढ़ना नहीं चाहिए।

दीपावली अपंग मानव मंडल के खूले मैदान में मनाई जाती है। उसमे नवजीवन और मदनमोहन डे केर सेंटर जैसी दो संस्था हिस्सा लेती है। दीपावली के उत्सव में खाने का प्रबंध अपंग मानव मंडल की तरफ़ से होता है। और पटाखे लिओ क्लब की तरफ़ से होते है। उस दिन बच्चों को लाल वस्त्र पहनने को बोला जाता है। चार बच्चों के बीच में एक शिक्षक होता है जो बच्चो का ध्यान रखते है की पटाखों से कोई नुकसान न हो। पटाखे फोड़ने के समय क्या सलामती रखनी चाहिए उसके बारे में बताया जाता है। बच्चों को मिठाई खिला कर दीपावली के बारे में बताया जाता है। पटाखों में सिर्फ फुलझड़ी ही दी जाती है। पटाखों के आवाज के डर के कारण सिर्फ फुलझड़ी दी जाती है। दीपावली का त्यौहार शिक्षक और बच्चों के लिए आनंददायक रहता है।

यह त्यौहार बहार क्यों मनाया जाता है ?

संस्था छोटी होने से खूले मैदान में उत्सव मनाया जाता है जिससे बच्चों को ज्यादा आनंद मिल सके। और इससे बच्चे पतंग कैसे उड़ाया जाए, पटाखे कैसे फोड़े जाए, गरबा कैसे खेला जाए वो सब जान कर त्यौहार का आनंद उठाते है। अभिभावकों और बच्चों को नई जगह जाने का और होटल में खाने का आनंद और अनुभव मिलता है।

इस प्रकार से बच्चों को बहार ले जा कर त्यौहार मनाया जाता है. संस्था द्वारा बंध हॉल, गार्डन और खूले मैदान में जा कर बच्चों को अलग-अलग अनुभव दिया जाता है।

श्रीमती संगीता पंचाल
(आउटडोर सेलिब्रेशन इन्चार्ज)
(नवजीवन ट्रेनिंग सेन्टर)

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट
(N.G.O.)
संचालित
ॐकार दिव्यांग ट्रेनींग डे-केर सेन्टर
मानसिक दिव्यांग बच्चों के
लिए नि:शुल्क तालीमी संस्था
शाला में प्रवेश के लिए संपर्क करे
सुमेल ५, हाउस नं.: 48/डी, बिझनेश पार्क,
चामुंडा ब्रीज कोर्नर, असारवा,
अहमदाबाद-380 016
मो. : 99749 55125, 99749 55365